CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीर्जयति ॥

भारत में शक्ति पूजा।

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेष देवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताःस्म विदधातु शुभानि सा नः॥
[स० श० ४।२]

माननीय सज्जनगण!

आज हम आपके समक्ष एक ऐसा विषय लेकर उपस्थित होते हैं जिस पर विना विचार किये अब कार्य न चलेगा। भारत शक्ति पूजक है, शक्ति पूजा इसका अनादिकाल सिद्ध धर्म है। जब से भारत में शक्ति पूजा का ह्रास हुआ है तबसे हम निर्बल हो गए हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण वर्तमान समय है। भारत में जिस समय शक्ति पूजा होती थी उस समय भारत शक्तिशाली था, धन धान्य पूर्ण था, सुख और शान्ति का निकेतन था। आज सर्वथा उसके विपरीत है, न धन है, न बल है, न विद्या है। हर प्रकार से हम शक्तिहीन हो गये हैं, इसलिये आओ! हम सब मिल कर शक्ति पूजा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करें जिससे भारत फिरसे धन धान्य पूर्ण बने। भारतीय मनुष्यों को वेद सबसे प्रथम—

'मातृदेवोभव'

यह उपदेश देता है [माता–देवता–यस्य–असौ–मातृ देवः] माता जिसकी प्रधान (आद्य) देवता हो उसको मातृदेव कहते हैं। भारत पहिले मातृदेव है; पीछे पितृदेव है। माता का अर्चन, माता का वन्दन वेद में पुत्र के लिये प्रधान धर्म कहा है। जो पुत्र मातृ वन्दनसे विमुख है वह पुत्र नहीं, किन्तु कुपुत्र है। वात्सल्य भाव से प्रेरित होकर माता जब कुपुत्रके पालन पोषणसे भी विमुख नहीं होती है,तब सु-पुत्र के लिये तो फिर कहना ही क्या है? इसीलिये कहा है–

'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति'

पुत्र कुपुत्र भले ही हो जावे--परन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती है। वेद में--

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब ! नस्कृधि ॥

यह मन्त्र मातृ वर्णन में आया है। इसीलिये इस मन्त्रमें [अम्ब] यह सम्बोधन है। [प्रशस्ता अम्बा अम्बितमा] प्रशस्त माता को अम्बितमा कहा जाता है। यावन्मात्र विश्व में मातृ शक्ति अनेक रूप धारण कर विश्व का भरण पोषण करती है और—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यं कामये तन्तमुग्रं कृणोमि १०।१२५।१

इस ऋग्वेदीय मन्त्र के आधार पर कहती है कि मैं जिसको चाहती हूँ—उसी को "उग्र" बनाती हूँ। ब्रह्मा, विष्णु, महेशों को बलवान् बनाना मेरे ही आधीन है।

१ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि १०।१२५।१

२ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ६

३ अहमेव वात इव प्रवामि

आरभमाणा भुवनानि विश्वा ८

४ अहं दधामि द्रविणं हविष्मते २

५ तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा ३

६ अहं जनाय समदं कृणोमि ६

यह ऋग्वेद के मन्त्र इसमें प्रमाण है। इस सूक्त का नाम वेद में देवी सूक्त है। वाणी इसकी देवता है। ऊपर के मन्त्र में सरस्वती देवी, नदी, अम्बा इत्यादि नाम एक मात्र शक्ति के ही हैं। शक्ति विश्व में क्या २ काम करती है, इसका निदर्शन 'देवी सूक्त' है। देवीसूक्त में वाणी बनकर देवी कहती है कि "मैं रुद्र, वसु, आदित्य, विश्वेदेव, मित्र, वरुण इन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार आदि के साथ रहकर सोम, त्वष्टा, पूषा, भग आदि को उत्पन्न करती हूँ, सृष्टि के आरम्भकाल में मैं ही "वातइव" ।हवा की तरह तेजी से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दौड़ती हूँ, मैं ही मनुष्य को "द्रविण" देती हूँ, मैं ही आनन्दित करती हूँ, इसी कारण देवगण मुझको अनेक रूप में मानते हैं" यही ऊपर के मन्त्रों का आशय है। ऋग्वेद गत इन मन्त्रों के आधार पर शक्ति तत्व का जितना विस्तार किया जावे उतना ही "मार्कण्डेयपुराण" विस्तृत होता है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

वेद में ईश्वर को सर्व शक्तिमान् माना है। माया प्रकृति शक्ति चेतना, सरस्वती, अम्बा, व्याप्ति; वामा आदि पद प्रकृति के लिये वेद में आते हैं। यह सब शक्ति के पर्याय वाचक शब्द हैं।

१ इन्द्रो मायाभिः पुरुरूपईयते ।

२ परास्य शक्तिर्विविधैवश्रूयते (श्वे० ६।८)

३ ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्
देवाऽऽत्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढ़ाम् (श्वे० १।३)

४ य एको वर्णो बहुधा 'शक्तियोगात्'
वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति (श्वे०)

५ सइममेवात्मानं 'द्विधाकृत्वा' पादयत् (श० प०)

६ उमासहायं परमं महेश्वरं
त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तम् (कै० उ०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ त्वं स्त्री त्वं पुमानसि (अथर्व०)

८ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ (यजु० ३१ । २२)

९ मायान्तु प्रकृतिं विद्यात्
मायिनं तु महेश्वरम् (श्वे० ४ । १०)

इत्यादि वेद मन्त्रों में शक्ति के पर्यायों का उपयोग किया गया है। इन्द्र माया के सहयोग से अनेक रूप होता है माया शक्ति है। शक्ति ही प्रकृति है। शतपथ श्रुति में ईश्वर का अर्धांश स्त्री को माना है। उमा-रमा श्री धी आदि पद प्रकृति के ही विस्तार का निदर्शन कराते हैं। इन शक्तियों को साथ लेकर ही ईश्वर 'शक्तिमान्" बना हुआ है।

शक्ति का तृवृत्करण।

सात्विक, राजस, तामस भेद से शक्ति तृवृत् है। तीन गुणों के वरण करने के कारण शक्ति का नाम "तृवृत्" हुआ है। इस तत्व का विस्तार ही पञ्चीकरण है। प्रत्येक तृवृत् शक्ति के अन्दर पञ्चीकरण भरा हुआ है। पृथ्वी आदि पञ्च तत्व पञ्चीकरण के निदर्शन हैं। प्रकृति का पञ्चीकरण समस्त विश्व का आश्रय है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव यह तीनों प्रकृति के तृवृत्करण के रूप हैं। महाकाली, महालक्ष्मी, महा-सरस्वती यह तीनों शक्तियाँ एक माया के तृवृत्करण के प्रत्यक्ष निदर्शन हैं, इन बातों का तत्व समझ कर ऋषियों ने शक्ति पूजा का आश्रय लिया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहि तया विना परमेश्वरस्य स्रष्टृत्वं
सिद्धयति । शक्ति रहितस्य—तस्य—प्रवृत्त्यनुपपत्तेः ।

[ब्र० सू० शं० भा० १ । ४ । ३]

एकस्यापि ब्रह्मणो विचित्र शक्तियोगात्
क्षीरादिवद्विचित्र परिणाम उपपद्यते ।

[ब्र० सू० शं० भा० २ । २ । २४]

यह उदाहरण शङ्कर भाष्य का है। भगवान् शङ्कर कहते हैं कि परमेश्वर शक्ति का आश्रय लिये विना स्रष्टा नहीं बन सकता है। अनेक शक्तियों के सहयोग से एक ब्रह्म का अनेक रूप होता है, जैसे विकार को प्राप्त होकर एक ही दुग्ध, दधि, तक्र आदि बनता है। शक्ति का सहयोग ही जगत की विचित्रता का द्योतक है इसी कारण—

"शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्"

ऐसा श्री शङ्कराचार्य ने लिखा है। शक्तिको साथ लेकर ही शिव जगत् का उत्पादक होता है, उसी अन्नपूर्णा भगवती को लेकर जगत का पालक कहाता है; और उसी का रूपान्तर महाकाली को साथ लेकर महाकाल शिव संहर्ता बनता है—

यह सब खेल एकमात्र विश्वव्यापिनी, शक्तिका है, जिसको न समझ कर आजकल अशास्त्रज्ञ मूढ़जन काली जी पर धरना दे रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकृतिं पुरुषं चैव विध्यनादी उभावपि ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यय! ॥

जगद्गुरु श्रीकृष्ण के श्री मुख से निकले हुये इन वचनों में पुरुष के साथ २ प्रकृति को भी अनादि माना है, और अपनी माया के साथ २ अपना भी भगवान ने अवतरण माना है। गुणमयी दैवी देवताओं से सम्बन्ध रखने वाली अनादि काल सिद्ध "अनिर्वचनीय" माया में ओत प्रोत ईश्वर जिस सुन्दरता के साथ अपने में माया का समावेश बतला रहा है वह विद्वानों के मनन करने योग्य है।

महाकाल और महाकाली।

काल पदार्थ मात्र के प्रति कारण है, ऐसा विज्ञानवादी मानते हैं। काल रक्षक और भक्षक दोनों ही रूपमें रहता है। सृष्टि काल में होती है, और उसका लय भी काल में ही होता है। इसका वर्णन अथर्ववेद के कालसूक्त में मिलता है काल के अन्दर रहने वाली काल की शक्ति ही "काली" है। मुण्डक में (१।२।४) काली-करालीं (करालबदना) सुलोहिता, धूम्रवर्णा आदि काल शक्तियों का नाम मिलता है। जिन साधकों ने एकान्त में बैठ कर "धूमावती" का मन्त्र जप किया होगा, वे ही काल की "धूम्रवर्णा" महाशक्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का तत्व समझ सकते हैं। भगवान् विष्णु काल हैं। इसी कारण गीता में—

कालोस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः ॥

ऐसा श्रीकृष्ण जी ने स्वयं अपने लिये कहा है। कालरूप होकर भगवान् समय २ पर खण्ड प्रलय करते हैं। जब महा-प्रलय का समय आता है, तब शिव रूप महाकाल की महा शक्ति कराली "करालवदना" बन कर "महाकाली" के रूप में अवतीर्ण होती है, जिसका दर्शन कलकत्ते में काली घाट पर होता है। इस महाकाली का आसन "शव" है। मुण्ड-माला आभूषण है। श्मशान निलय है। पिशाच सहचर हैं। इस भयङ्कर भैरव रूप को लेकर इस महाशक्ति का महाप्रलय में आविर्भाव होता है, जिसका वर्णन मार्कण्डेय पुराण में विद्यमान है।

शक्ति का विराट् रूप।

जिस प्रकार भगवान का विराट् स्वरूप, दिव्य दृष्टि वेद्य हैं, उसी प्रकार भगवती का भी विराट् स्वरूप केवल ज्ञान रूप दिव्य दृष्टि वेद्य है। इसमें सन्देह करना व्यर्थ है। इसी कारण इन दोनों का प्राकट्य एक निमित्तक है।

यदा यदाहि धर्मस्य।

परित्राणाय साधूनाम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवद्गीता के इन दो पद्यों में भगवान् के प्राकट्य में तीन हेतु दिये हैं, सज्जन रक्षण; दुर्जन भञ्जन; और धर्म संस्थापन ? इन तीन कारणों को लेकर भगवान् प्रकट होते हैं। इसी प्रकार—

देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते १।६६
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ११।५५

इन सप्तशती के दो पद्यों के आधार पर भगवती का प्राकट्य भी उन तीन कारणों से ही होता है, जो ऊपर दिये हुए है। देवगणोंका रक्षण असुरगणों का मर्दन और जगत में शान्ति स्थापन यही भगवती का प्रधान कर्तव्य है। इसका उल्लेख—

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त—
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ४।२३

इस पद्य में मिलता है। त्रिलोक रक्षा, शत्रुओंकी स्वर्गति और अभय स्थापन यही भगवती के अवतरण का लक्ष्य है, जिसका वर्णन सप्तशती में स्थल २ पर मिलता है। अब हम इस आख्यानका बीज रूप अथर्वका मन्त्र उपस्थित करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यां त्वा देवा असृजन्त विश्वे
इषुं कृण्वाना असनाय धृष्णुम् ।
सानो मृडय विदथे गृणाना
तस्यै ते नमो अस्तु देवि १ । १३ । ४

अथर्ववेद के इस मन्त्र में सप्तशती प्रतिपादित भगवती का समस्त विराट् स्वरूप प्रतिपादित है । मन्त्रार्थ इस प्रकार है—

हे देवि असनाय शत्रुविमर्दनाय धृष्णुं धर्षणशीलां शत्रुपराक्रमप्रतीकारयोग्यां इषुम् बाणादिशस्त्रास्त्रसम्पन्नां कृण्वाना: सम्पादयन्त: विश्वे सर्वे देवा: दिव्यगुणवन्त इन्द्रादय: यां त्वां असृजन्त स्व स्व शक्ति प्रदानेन प्राकट्यमनयन्, सा त्वं न: अस्मान् गृणाना अनुगृह्णाना विदथे यज्ञादिसमस्तशुभ कार्य निष्पत्तये मृडय सुखय आनन्दितान् कुरु इत्यर्थ: ।

मन्त्रार्थ का भाषानुवाद ।

हे देवि! शत्रुओं के नाश करनेके लिये संग्राममें डटने योग्य अनेक अस्त्रशस्त्रों से अलंकृत जिस आपके स्वरूप को समस्त इन्द्रादि देवगणों ने अपनी २ शक्ति के अनुरूप प्रकट किया वह आपका स्वरूप हमको अनुगृहीत करता हुआ, समस्त शुभ कार्यों के सम्पादन के लिये आनन्दित करे, यह मन्त्र का भावानुवाद है। इसीको लक्ष्यमें रखकर परमकारुणिक ऋषियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने भगवती का जो रूप वर्णन किया है उसका निदर्शन हम उपस्थित करते हैं।

शक्ति परिचय।

१ प्रकृतिस्त्वं हि सर्वस्य १ । ७७

२ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते ! सनातनि ! ११।११

३ विद्याःसमस्तास्तव देवि भेदाः ११ । ६

४ अव्याकृताहि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ४ । ७

५ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानम् ४ । १०

६ विद्यासि सा भगवती परमाहि देवी ४ । ९

७ आधारभूता जगतस्त्वमेका ११ । ४

सप्तशती के इन पद्यों में शक्ति का विस्तृत रूप दिखाया गया है भगवती सबकी प्रकृति है, सृष्टि स्थिति विनाश का कारण है, अव्याकृत आद्या प्रकृति है, शब्द रूप से ऋगादि वेदों की उद्भावयित्री है, विद्या के समस्त भेदों की असली प्रतिकृति है, समस्त जगत का एक मात्र आधार है। इन बातों पर गम्भीर गवेषणा करनी चाहिये।

[दैवी शक्ति का संगठन]

१ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतंपुरा २ । २

२ तत्रासुरैर्महासैन्यैर्देवसैन्यंपराजितम् २ । ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ ततोतिकोपपूर्णस्य चक्रिणोवदनात्ततः ।
निश्चक्राममहत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्यच २ । १०

४ अन्येषांचैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत २ । ११

५ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ।
एकस्थं तदभून्नारी–व्याप्तलोकत्रयं त्विषा २ । १३

पहिले समय एकबार एक सौ वर्ष पर्यन्त, देवासुर संग्राम हुआ था उसमें असुरों ने देवगणों को हरा दिया, उस समय क्रोध पूर्ण ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र आदि देवगणों का उग्र तेज निकलकर एकत्र हुआ जो देवी के रूप में परिणत हुआ। यही अथर्ववेद के मन्त्रार्थ का विस्तृत रूप है ।

एतस्मिन्नन्तरे भूप ! विनाशाय सुरद्विषाम् ।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ८ । १२

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्यच शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः १३

यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ।
तद्वदेवहि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ १४

सप्तशती के इन पद्यों में भगवती का विराट् रूप दिखाया गया है जिस प्रकार भगवद्गीताके[अनेकवक्त्र नयनं० ११-१०]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पद्य में श्रीकृष्ण जी ने अपना विराट् स्वरूप निर्दिष्ट किया है वैसा ही यहां पर भगवती का विराट् स्वरूप निर्दिष्ट है जिसका वर्णन सप्तशती के अनेक स्थलों में उपलब्ध होता है।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि! समस्त मेत-
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः ११। १५

सप्तशती के इस पद्य में वैष्णवी शक्ति का वर्णन है। यह अनन्त वीर्य माया रूप विश्व का बीज है। इसी को लेकर [प्रकृति स्त्वंच सर्वस्य १। ७७] ऐसा अन्यत्र कहा गया है। इसी प्रकार—

१ माहेश्वरी वृषारूढ़ा ८। १६
२ तथैव वैष्णवीशक्तिर्गरुड़ोपरिसंस्थिता ८। १८
३ आयाता ब्रह्मणः शक्तिः ८। १५

इन पद्यों में—अनेक शक्तियों का भिन्न २ रूप में वर्णन मिलता है। जिनको इस विषय का रहस्य समझना हो वे सज्जन मार्कण्डेय पुराण का स्वाध्याय करें। अब हम इस प्रसंग में अन्य आवश्यक विषय उपस्थित करते हैं।

वेद और वाम मार्ग।

वैदिक कोष निरुक्तमें "वाम" शब्द प्रशस्यार्थ में व्यवहृत हुआ है। प्रशंसनीय अनादि काल सिद्ध वैदिक तत्व को, वैदिक जन वाम कहते हैं। यजुर्वेद के--

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाममद्य सवितर्वाममुश्वो-
दिवे दिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।
धिया-वामभाजः स्याम ८ । ६

इस मन्त्र में "वयं धिया वामभाजः स्याम" ऐसी प्रार्थना की गई है । यदि वाम मार्ग अप्रशस्य होता तो वेदोंमें उसको प्राप्त करनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना नहीं होती प्रार्थनाका होना इस मार्ग को प्रशस्य सिद्ध करता है इसके अध्यक्ष इस मार्ग के आचार्य योगिराज भगवान् शङ्कर है इसीलिये उनको वेदमें "वामदेव" कहा गया है [वामानां प्रशस्यानां देवो वामदेवः] वेद में "वामदेव्य" गान प्रसिद्ध है । सामवेद में उसके अनेक मन्त्र आते हैं । उनके द्रष्टा वामदेव है । इसलिये "वामदेवेन दृष्टंसाम वामदेव्यम्" ऐसा कौमुदी में उदाहरण मिलता है।

जिन मनुष्यों ने वेदों का स्वाध्याय नहीं किया है, वे अशिक्षित वाम मार्ग को "अश्लील" पद से संबोधित करते हैं और "सोमरस" प्रतिपादक मन्त्रों को मद्य प्रतिपादक मानकर उनको भी "अश्लीलता" की पदवीसे अलंकृत करते हैं। यदि अश्लीलताकी यही प्रगति बनी रही तो कुछ दिनों के बाद वेद २ चिल्लाने वाले मनुष्यों को वेद से हाथ धोना पड़ेगा और कोरे नास्तिक बनकर संसार में रहना पड़ेगा इसलिये वाम शब्दसे डरना नहीं चाहिये,प्रत्युत उसका प्रसंग देखना चाहिये । शब्द अनेकार्थ होते हैं। इसी कारण उनको कामधेनु पद से वेद कहता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवीं वाचमजनयन्त देवाः
तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रा इषमूर्जं दधाना
धेनुर्वाक् अस्मान् उपसुष्टुतैतु । १०

"देव्यथर्वशीर्ष" के इस मन्त्र में वाणी को 'धेनु' कह कर सम्बोधित किया है। जगद्गुरु श्रीआद्यशङ्कराचार्यजी वाणी को "देशिकरूपेण दर्शिताभ्युदयाम्" इस अपनी कृतिमें समस्त जगत का आचार्य मानते हैं, इस लिये किसी शब्द को देख-कर 'नाक' नहीं सकोड़नी चाहिये।

१ तस्य "योनिं" परिपश्यन्ति धीराः ।
२ इमं ते "उपस्थं" मधुना संसृजामि ।
३ तस्यां सुपर्णा "वृषणा" निषेदतुः ।

वेद के इन मन्त्रों में डबल कामा के अन्दर जो पद आये हुये हैं वह कितने 'अश्लील' हैं, यह पाठकोंसे छिपा नहीं है। यदि वास्तव में ये पद अश्लील हैं तो इनको वेद से निकाल देना चाहिये। यदि वेद में आनेके कारण अश्लील नहीं है तो "वाम" शब्द क्योंकर अश्लील माना जावे? उसका भी कई वार वेद में पाठ आता है।

आजकल भारतमें एक ऐसी भी संस्था बनी है जिसमें सुधा-रक नामधारी प्रच्छन्न नास्तिक समाविष्ट हैं। इनका एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलकत्ते में फण्ड है, जिसका "जीवदया प्रचारिणी सभा" के नाम से नोटिस निकलता है। इनका उद्देश्य हिन्दू मन्दिरों पर आक्रमण करना है। इनकी ओर से ही पिछले वर्ष कालीघाट पर एकत्र होकर कुछ गुण्डों ने उपद्रव मचाया था जिसको हमारी गवर्नमेंट ने बड़ी सावधानी के साथ हटाया। इस दल में सब मनुष्य राजद्रोही हैं। जो मन्दिरों पर आक्रमण करके अपना खर्च वसूल करते हैं। मन्दिरों के प्रबन्धकों को इस प्रकारके धूर्तों से सावधान रहना चाहिये। ये लोग धीरे२ जीवदया प्रदर्शनके बहाने से अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं, जिसका परिणाम अन्त में बहुत भयङ्कर होगा।

वेद और बलिदान।

संसार में बलिदान की प्रथा अनादिकाल सिद्ध है। बिना "बलिदान" के कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता। मातृभूमि के उद्धारार्थ जिन नरवीरों ने बात की बात में अपना शरीर बलिदान कर दिया वे "तिलक, शिवाजी, प्रताप" आदि महानुभाव भारतमाता के "भालबिन्दु" बनकर आज भी इन्दुधवलयश प्राप्त कर रहे हैं। भारत में जब से 'अहिंसा परमोधर्मः' का पाठ पढ़ा गया तब से क्षत्रिय निर्वीर्य हो गये। शत्रुओं पर प्रहार करनेका अभ्यास ही जाता रहा। अब यहां तक आत्मा कमजोर हो गया कि रक्त चन्दन की रक्तधारा देखकर भी 'गश' आता है। इसी कारण दिनप्रति दिन भारत गिरता जाता है। उसके उठने की कोई सम्भावना नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"वीरभोग्या वसुन्धरा"

वसुन्धरा वीर भोग्या है, निर्बल भोग्या नहीं। जिन राजाओं ने प्राचीन काल में देवी और महादेव पर मुण्डमाला चढ़ाई वे श्री १०८ गुरु गोविन्दसिंह की तरह विजयी हुए। अब भी जिनको सुख प्राप्त करना हो वे महारात्रिमें शिव अथवा कालीपर एकोत्तर शत 'बलि' देनेका प्रबन्ध करें। बलि किस पशु का होना चाहिये? यह बात वेदों से जाननी चाहिये।

बलि के तीन भेद।

सात्विक, राजस, तामस् भेद से बलि तीन प्रकार का होता है। उनमें "वैष्णवी" देवीका बलि सात्विक होता है। काली माता का बलि राजस और तामस होता है। इसी लिये—

क्षीरेण ब्राह्मणैस्तर्प्या घृतेननृपवंशजैः।
माक्षिकैर्वैश्यवर्गेण मद्याजैः शूद्रसम्भवैः ॥१॥

ऐसा "भैरवीतन्त्र" में लिखा है। अन्त्यजवर्ग और शूद्रके लिये, जो बलि प्रथा शास्त्रों में लिखी है उसका निरूपण अनेक तन्त्रों में विद्यमान है। देवताओंके लिये वो ही पदार्थ दिया जाता है जिसको मनुष्य स्वयं अपने व्यवहारमें लाता है। इसी कारण—

२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"यदन्नःपुरुषोलोके तदन्नास्तस्य देवताः"

ऐसा [वा० रा० अ० कां० सर्ग १०३ पं० ३०] में लिखा है। जो मनुष्य मांस भोजी है उसके देवता भी मांस भोजी हैं। जैसे महाकाली, महाभैरव, महायक्ष आदि इनके उपहार में मद्यमांस ही दिया जाता है ऐसा "आम्नाय" है।

प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासम्प्रदाने ॥ १-३-६१

इस पाणिनि सूत्र के "महाभाष्य" में पतञ्जलि ने "इन्द्राग्निभ्यां छागं हविर्वपां मेदः प्रस्थितंप्रेष्य" यह श्रौत उदाहरण दिया है। इसमें इन्द्र और अग्निदेव के लिये छाग "बकरेकी वपा" का उल्लेख है। इसी प्रकार—

मांसन्तु सवनीयानाम् ३।८।४२

छागो वा मन्त्रवर्णात् ६।८।३३

वनिष्ठुसन्निधानादुरूकेणवपाभिधानम् ६।४।२२

पूर्व मीमांसा के इन सूत्रों में तथा इनके शाबर भाष्य में बकरे का वर्णन मिलता है। इस लिये यज्ञ में तथा देवनिमित्तिक वलि में पशु हिंसा, वैदिक है।

"पुरुषं हवै देवाः अग्रे पशु मालेभिरे तस्यालब्धस्यमेद अपचक्राम। साश्वं प्रविवेश। ते अश्वमालभन्त। स गां प्रविवेश। ते गामालभन्त। सोविं प्रविवेश। ते अविमालभन्त। सः अजं प्रविवेश ते अजमालभन्त। सइमां पृथिवीं प्रविवेश ताविमौ व्रीहियवौ (श० प० १।२।१।६)"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतपथ ब्राह्मण के इन मन्त्रों में पुरुष पशु का रूपान्तरित होना लिखा है। इसी का मूल वर्णन "अवध्नन्पुरुषं पशुम्" इस पुरुष सूक्त के मन्त्र में है। ब्रीहि और यव पुरुष पशु के रूपान्तर है।

यदा पिष्टानि अथ लोमानि भवन्ति।
यदा आप आनयति अथ त्वग्भवति।
यदा संयौति अथ मांसं-भवति।
यदा शृतः अथ अस्थि भवति।
अथयदाभिवारयति तं मज्जानं दधाति।

शा० ब्रा० १। २। १। ७

इस शातपथी कण्डिकामें सब कुछ पिष्ट पशु का वर्णन है। जो इस वैदिक पद्धति को नहीं मानतेहैं वे यदि नास्तिक नहीं है तो और क्या है? हिंसा दोष से बचने वाले इन बातों पर जरा पक्षपात छोड़ कर विचार करें, तब उनको असली तत्व प्रतीत होगा।

ऋग्वेद और बलिदान।

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ
बलिमग्ने! अन्तित ओत दूरात् ५। १। १०
अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च,
बलिं शीर्षाणि जभ्रुः अश्वानि ७। १। १९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भरन्त्यस्मै संयतः पुरः प्रस्रवणा वलिम् ८।१००।९
त्रिशश्चक्रे वलिहृतः सहोभिः ७। ६। ५
विशो वलिहृतः करत् १०। १७३। ६

ऋग्वेद के इन मन्त्रोंमें वलि प्रदान का उल्लेख है। ईश्वर ने प्रजा को वलिप्रदान योग्य वनाया, प्रजाजन ईश्वर के लिये वलि देते हैं, इत्यादि वैदिक वर्णन वलि को सिद्ध करता है। इसी प्रकार—

इमाविशो अभिहरन्तु ते वलिम् १६।४५।४
वयं तुभ्यं वलिहृतः स्याम १२। १।६२
वलिहाराय मृडतान्मह्यमेव ११। १। २०
यस्मै देवाः सदावलिं यच्छन्ति १०।७।३९
वहुं वलिं प्रतिपश्याम उग्रः ३। ४। ३
सजातांस्ते वलिहृतः कृणोतु ११। १। ६

अथर्ववेद–के इन मन्त्रोंमें वलि प्रदान का उल्लेख है। यह प्रजा तेरे लिये वलिप्रदान करें, हम तेरे लिये वलिप्रदान करने वाले बनें, वलि देने वाले मुझको सुख प्रदान करें, देवगण जिसको वलि देते हैं, इत्यादि वैदिक वर्णन वलि प्रदान को सिद्ध करता है। इसलिये वलिप्रदान वैदिक है। इसका विरोध करना वेद का विरोध करना है। जो मनुष्य हिंसा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्य पाप की आपत्ति दिखाकर देव पूजन में पशु वलि का विरोध करते हैं, वे वास्तव में वेद विरोधी नास्तिक है। क्योंकि—

न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यसि,
देवां इदेषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्र यन्ति सुकृतो नापि दुष्कृतः।
तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥

वेद—इस मन्त्र के द्वारा हिंसा का समर्थन करता है। "नहिंस्यात्सर्व्वभूतानि" यह "उत्सर्ग" वाक्य "अग्नीषोमीयं पशुमालभेत" इस "अपवाद" वाक्य से वाधित है। इस कारण हिंसा जन्य पाप का, मान्त्रिक प्रत्याख्यान सर्वथा बलवत्तर है। इस विषय में सभी धर्माचार्य सहमत हैं। देखिये—

अशुद्धमितिचेन्न, शद्धात् ३। १। २५

इस वेदान्तसूत्र पर श्री शंकराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री निम्बार्काचार्य अपने २ भाष्यमें लिखतेहैं "शास्त्र हेतुत्वा-द्धर्माधर्मविज्ञानस्य। शास्त्राच्च हिंसानुग्रहात्मको ज्योति-ष्टोमो धर्म इत्यवधारितः। तस्माद्विशुद्धं कर्म वैदिकं शिष्टै-रनुष्ठीयमानत्वात् अनिन्द्यमानत्वाच्च" (शांकर भाष्य) "स्थावरभावं च पापफलं स्मरन्ति—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतांनरः ।

वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम् १२ । ६

इति । पशोर्हि संज्ञपननिमित्तां स्वर्गलोकप्राप्तिं वदन्तं शब्दमामनन्ति—

हिरण्यशरीर ऊर्ध्वं स्वर्गलोकमेति ।

इत्यादिकम् "। अतिशयिताभ्युदयसाधनभूतो व्यापारः अल्प दुःखदोपि न हिंसा प्रत्युत रक्षणमेव । तथाच मन्त्रवर्णः "नवाउ इति" । चिकित्सकंच तादात्विकालपदुःखकारिणमपि रक्षकमेव वन्दति पूजयन्ति च तज्ज्ञाः"(रामानुजभाष्य) "नहिंस्यात्सर्वभूतानीति" हिंसात्मकाधर्मनिषेधशास्त्रं धर्म विषयेन सुखोदर्कसंज्ञपनशास्त्रेण वाध्यत इति भावः" (वेदान्त कौस्तुभ) इन तीन भाष्यों में विधिविहित हिंसा का समर्थन स्पष्ट है । तान्त्रिक विधि में देव निमित्तक पशु बध अनुमत है । मनुस्मृति में वाचिक पाप फल में पशुत्व प्राप्त होना लिखा है । इसलिये पशु पापयोनि है । उसका देव निमित्तक बलि से स्वर्गारोहण वेद प्रतिपादित है । 'इसोलिये यज्ञ देव पूजन आदि में पशु बलि होता है । जिस पशु का वलि दिया जाता है वह पशु पाप योनि से छूट कर स्वर्ग जाता है, ऐसा वेद स्वयं कहता है । जिस प्रकार थोड़ा कष्ट देकर आराम पहुँचाने वाला वैद्य हिंसक नहीं माना जाता है, वैसे ही पाप योनि से जीव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को निकाल कर देवलोक में पहुँचाने वाला देव पूजक हिंसक नहीं कहा जा सकता है, यह श्री रामानुजाचार्य का आशय है। यहां पर चार्वाक की ओर से—

पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति ।
स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते ॥१॥

यह प्रश्न उपस्थित होता है? दयानन्द ने भी इसी प्रश्न को उठा कर चार्वाक मत का समर्थन किया है। क्यों न हो? चोर का गवाह गठकटा होता ही है। परन्तु वेदाभिमानी अन्य धर्माचार्य इसका एक स्वर से विरोध करते हैं, जो पीछे दिखाया गया है। चार्वाक के प्रश्न का उत्तर यह है कि "कस्मान्न हिंस्यते? तादृश मंत्रविनियोगाभावात्, यदि सम्प्राप्येत तदा पितुरात्मनो वा संज्ञपने न कापि हानिः तादृशधर्मशास्त्रदर्शनात्" अब हम उन वचनों को उपस्थित करते हैं जिनमें देव निमित्तक पशुबलि का उल्लेख है। देखिये—

ओषध्यः पशवो वृक्षास्तिर्यञ्चः पक्षिणस्तथा ।
यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुवन्त्युत्सृतीः पुनः ५।४०
एष्वर्थेषु पशून्हिंसन्वेदतत्वार्थविद्द्विजः ।
आत्मानंच पशुंचैव गमयत्युत्तमां गतिम् ५।४२
या वेदविहिता हिंसा नियतास्मिंश्चराचरे ।
अहिंसामेव तां विद्याद्वेदाद्धर्मोहि निर्बभौ ५।४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ।
यज्ञस्य भूत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञेवधोऽवधः ५।३९

मनु के इन पद्यों में यज्ञ निमित्तक वध का समर्थन है। यज्ञ शब्द (यज्ञ देव पूजा--संगति करण दानेषु) इस धातु से बना है ! वेद में [यज्ञो वै विष्णुः] यह मन्त्र अनेक बार आता है, देव पूजा, देवनिमित्तक पूजा मानी जाती है। भगवती देवी है। देवी का पूजन वलि से होता है। वलि वैदिक है इसलिये उसका न करना पाप है।

सानुगेभ्यो वलिं हरेत् ३।८७
वास्तुमध्ये वलिं हरेत् ३।८९
वलिमाकाश उत्क्षिपेत् ३।९०

मनु के इन पद्यों में "वलि वैश्वदेव" का प्रसंग है। इनमें इन्द्र, वरुण, यम, कुवेर, भद्रकाली देवी आदि को प्रति दिन वलि देना लिखा है। वलि उसी पदार्थ से दिया जाता है जो अपने भोजन में आता हो ? इसलिये वलि का विरोध नहीं हो सकता है। भगवद्गीता में "येऽप्यन्यदेव ता भक्ताः" यह प्रश्न उठाकर "तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्ति" यह उत्तर देते हुये श्रीकृष्णने इस तत्वका अनुमोदन किया है अथर्व वेदके-

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय
दशकृत्वः पशुपते नमस्ते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता
गावो अश्वाः पुरुषा अजाऽवयः ११।२६।२

इस मन्त्र में पशुपति के लिये पांच पशु नियत किये हैं। इनको लेकर ही दीक्षित ने कौमुदी में "उपहृत पशू-रुद्रः" लिखा है।

"पाशबद्धोभवेज्जीवः पाशमुक्तः सदा शिवः"

"सदा शिव तन्त्र" लिखित इस वाक्य से पाशबद्ध सभी जन्तु "जीव" माने गए हैं। उनका आत्म समर्पण होना स्वामी के लिये भक्तितन्त्र सिद्ध है।

१ आग्नेयः कृष्णोऽजः २६। ५९
२ अधोरामः सावित्रः
३ वारुणः पेत्वः ५८

यजुर्वेद के इन मन्त्रों में कालावकरा अग्नि का भाग माना है। अधोराम सूर्य का भाग है। पेत्व-वरुण देव का है, वेद स्वयं इस बात को स्वीकार करता है। निरुक्त-कार यास्काचार्य "अधोरामः सावित्र इति पशु समाम्नाये पठ्यते" ऐसा लिख कर यजुर्वेद के मन्त्रों का समर्थन करते हैं। मनु में "घृतपशु अथवा पिष्ट पशु का" जो उल्लेख है, वह प्रतिनिधित्वेन है। मुख्यतया प्रत्यक्ष पशु का ही वहां पर उपादान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्मस्य शब्दमूलत्वात्- ।
अशब्दमनपेक्ष्यं स्यात् १ । ३ । १
आम्नायस्यक्रियार्थत्वात् ।
आनर्थक्यं–अतदर्थानाम् । १ । २ । १

इन मीमांसा के सूत्रों में शब्द प्रमाण रूप वेद का प्राधान्य लिखा है । न उपजने वाले पुराने अन्न का नाम "अज" किसी वेद मन्त्रसे अभिप्रेत नहीं है;इसी कारण वैदिक कर्म में अग्राह्य है । सार शून्य, तुष-प्राय अन्न को देव निमित्तक मानना, केवल लेखकों का उन्माद मात्र है । इसमें कोई मन्त्र प्रमाण नहीं है ।

श्रुतिस्मृतिपुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते ।
श्रुतिस्तत्र प्रमाणं स्यात्तयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा ।

इस प्रमाण से प्रमाण परम्परा में वेद का ही प्राधान्य माना जाता है । वेद विरुद्ध पुराण और इतिहास का मानना केवल परप्रतारण मात्र है, जो मनुष्य पुराणों का अवलम्ब लेकर वेदां पर हरताल लगाना चाहते हैं, वे वैदिक मार्ग से कोसों दूर हैं, इस लिये नास्तिक हैं । वृक्षों में मूर्छित जीव की अवस्थिति मनु प्रमाण सिद्ध है ।

अन्तः संज्ञाभवन्त्येते सुख दुःखसमन्विताः १ । ४९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसा मनु मानते हैं। वेद में भी [येन प्राणन्ति वीरुधः] इस मन्त्र में जीव की अवस्थिति वृक्षों में मानी है, जो सज्जन हिंसा से सर्वथा बचना चाहते हैं, उनका जीवित रहना असम्भव है, क्योंकि जीव की पापफलावस्था ही अन्न तृण, कन्द, मूल, फल रूप है। जीव इस रूप में आकर अपने पापों का फल भोगता है। इनको खाकर जो जीवन निर्वाह करते हैं, वे हिंसा से कदापि नहीं बच सकते हैं।

हिंसा–मनसा–वाचा–कर्मणा तीन प्रकार से होती है। "मनसानिष्टचिन्तनम्" इस प्रमाणसे मन से किसी का अ-निष्ट चिन्तन करना भी हिंसा से शून्य नहीं है। स्वपक्ष स्थापन और परपक्ष खण्डन करना वाचिक हिंसा है। यदि हिंसा से बचने वाला मनुष्य इन बातों को काम में लाता है तो अवश्य हिंसक है। ऐसी अवस्था में सभी धर्माचार्य हिंसक ठहरते हैं।

देवपूजन सबको करना है। तमोगुणी पुरुष, तमोगुण-प्रधान देवता को तमःप्रधान बलिद्रव्यसे ही तृप्त करेंगे यह प्राकृतिक नियम है। प्रकृतिमें सात्त्विक, राजस,तामस सभी प्रकार के जीव रहते हैं। वृक्ष, पक्षी, मनुष्य आदि सभी इन गुणों से सम्बद्ध हैं। महाकाली और महाकाल तमः प्रधान देव हैं। ऐसी अवस्था में महाकाली के उपहार स्थलमें उप-युक्त वेदोक्त 'बलि' को देखकर जो नास्तिक उसके प्रतिकूल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुराग्रह ठानते हैं उनको "रणाङ्गण" में भेज कर बलिपशु बनाना चाहिये और शास्त्रमर्मानभिज्ञ जो "पक्षपाती पण्डित" इधर उधर की बातें मिलाकर अपना प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये नास्तिकों की बातों का अनुमोदन करते हैं उनको भी उपहार पशु मानकर "देवार्पण" करना चाहिये।

निबन्ध का उपसंहार।

नायमात्मा शक्तिहीनेन लभ्यः।

इस श्रुति वाक्य से शक्तिहीन मनुष्य आत्म लाभ नहीं कर सकता है। इसीलिये योगी, ऋषि, मुनि, सब शक्ति का आश्रय लेते हैं। प्रधान शक्ति एक है, बाकी सब उसकी विभूतियां है। इसी कारण भगवती ने—

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैतादुष्ट ? मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः १। ५

ऐसा अपने श्री मुख से स्वयं कहा है। विभूति स्वरूप सब देवियों में एक प्रधान मूल प्रकृति की छाया मान कर समभावसे जो सबको मानता है वही सर्वोत्तम साधक है। यही बात—

त्रयाणामेकरूपाणाम् ४। ७। ५४

इ... ...ीमद्भागवत के पद्य में भी है। जिस प्रकार एक ब्रह्म ... ...ह ब्रह्मा विष्णु महेश के रूप में भिन्न २ प्रतीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है (वस्तुतः एक रूप है) उसी प्रकार एक माया की सत्ता देवी मात्र में झलक रही है। इन दोनों में कुछ अन्तर नहीं है। अथर्ववेद के काल सूक्त में (१९ । ६ । ५३)

कालः प्रजा असृजत
कालोह सर्वस्येश्वरः
कालः स ईयते परमोनुदेवः।

इन मन्त्रों के अन्दर जब ईश्वर को काल माना है उसकी शक्ति काली अवश्य माननी पड़ेगी। इसीलिये इस विषय में तर्क वितर्क उठाना उचित नहीं है।

सर्वेशाक्ताद्विजाः प्रोक्ता नशैवा न च वैष्णवाः।
आदिशक्तिमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥

देवी भागवत के इस प्रमाण के अनुसार गायत्री के उपासक द्विजमात्र शाक्त हैं। क्योंकि उपनयन के समय उनको गायत्री का ही प्रथम उपदेश गुरु के द्वारा मिलता है गायत्री वेद माता है ऐसा--

स्तुता मया वरदा वेदमाता
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

अथर्व वेद के इस मन्त्र में कहा है। इसीलिये "शब्दात्मिकासुविमलर्ग्यजुषां निधानं" इस पद्य में भगवती को वेदत्रयी के रूप में वर्णित किया है। वाणी स्वयं शक्ति रूपा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। उसमें भी 'अस्मात्पदादयमर्थोबोद्धव्य इतीश्वरसंकेतः शक्तिः" यह नैय्यायिकों का नियम है। काव्यप्रकाश के आरम्भ में "शक्तिर्निपुणता" इस कारिका में कवित्व का "बीज" शक्ति को ही माना है। इसलिये यावन्मात्र 'वाङ्मय' एक मात्र शक्ति का ही उल्लास है। हमारी परमाराध्या सरस्वती शक्ति का ही रूपान्तर है, जिनको जैन कवि भी उपास्य रूप में मानते हैं। देखिये—

चेतोऽञ्चलं चञ्चलतां बिमोच्य
सङ्कोच्य पञ्चापि समं समीरान्।
पश्यन्ति यन्मूर्द्धनि शाश्वतश्रि-
सारस्वतं ज्योतिरुपास्महे तत् १। ७०

यह पद्य वसन्त विलास नामक काव्य का है–जिसको बालचन्द्र सूरि ने लिखा है। इसमें हमारी सरस्वती का जो वर्णन है वह कितना सुन्दर है। हमारा प्रयोजन यह है कि संसार में जितने संस्कृत गद्य पद्य लिखने वाले कवि हुये हैं वे सब सरस्वती के उपासक हुये हैं। इसलिये 'शाक्त' है। जो शक्ति की उपासना नहीं करता है वह अशक्त है—उसका संसार में जीवन व्यर्थ है। उनसे न देश का उद्धार होगा और न जाति का–न कर्म का–न धर्म का वह केवल भाग्यहीन रहकर भारत की अधोगति का स्वप्न देख रहा है। इसलिये मित्रो! आओ–हम सब मिलकर–भारत माता के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्धारार्थ प्रयत्न करें, मातृशक्ति का मानकर प्रयोजन पड़ने पर अपने तन मन धन का–माता के समक्ष बलिदान करें, और मामूली बलिदानसे न घबड़ाकर-उच्च-तर बलि (आत्मबलि) देने के लिये सर्वदा सन्नद्ध रहें, तभी हमारा अभ्युदय होगा और तभी सुखमय-शान्तिमय-जीवन प्राप्त होगा।

धन्यवाद

हम इस निबन्ध के प्रकाशक पं० सुधाकर शर्मा जी को धन्यवाद दिये बिना इस निबन्ध से अलग नहीं हो सकते, क्योंकि आपने इस पुण्य कार्य के लिये हम से अनुरोध किया और उदार–भाव से इसको प्रकाशित कर सनातनधर्म को सर्वसाधारण के समक्ष उपस्थित किया। धार्मिक–जनता से तथा पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे इस निबन्ध को पढ़ कर प्रकाशक के पास एक धन्यवाद सूचक–पत्र अवश्य भेजें, तथा इस निबन्ध की बहुत सी प्रतियाँ मँगाकर सर्व-साधारण में इसका प्रचार करें। जिससे अग्रिम वर्ष का निबन्ध शीघ्र बन कर जनता में उपस्थित हो सके। जिस राज्य के सदुपयोग से यह पुण्य-कार्य प्रति वर्ष होता है, उसकी एकमात्र अध्यक्षा श्रीमती रानी महालक्ष्मी जी को भगवान् चिरायु करें, जिससे संसार में सनातनधर्म का प्रचार हो, तथा उनकी प्रजा में शान्ति और समृ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] रहे हैं । [illegible] के साथ अन्त में [illegible] भगवती की वन्दना [illegible]रते हुये इस लेख को विश्राम देते हैं ।

आनन्दमन्थरपुरन्दरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ॥१॥

॥ देव्यैनमः ॥

१३ । ३ । ३६] [अनूपशहर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh